समझदार जीवनसाथी एवं जिम्मेदार पिता' कार्यक्रम अर्न्तगत

## पैरोकारी एवं परियोजना स्थायित्व पर एनीमेटर्स एवं फैसलिटेटर्स प्रशिक्षण

# दो दिवसीय प्रशिक्षण माड्यूल

## (आठंवा चरण)

**आयोजक**

सेन्टर फॉर हेल्थ एण्ड सोशल जस्टिश (सी0एच0एस0जे0)
नई दिल्ली

**सहयोग**

ओक फाण्डेशन

## पृष्ठभूमि :

'ओक फाण्डेशन' के सहयोग से सेन्टर फॉर हेल्थ एण्ड सोशल जस्टिश (सी0एच0एस0जे0) द्वारा झारखण्ड के तीन जिलो रांची, गुमला व बोकरो में पार्टनर संस्थाओं के साथ मिलकर 30 गांवों में सघन रूप से काम किया जा रहा है। इन जिलों में गांव के स्तर पर एक पिता समूह व एक किशोर लड़कों के समूह गठित किये गये हैं। 'समझदार जीवनसाथी व जिम्मेदार पिता' कार्यक्रम के अर्न्तगत गांव स्तर पर समूह सदस्यों की मदद के लिए एक एनीमेटर का चयन पार्टनर संस्थाओं द्वारा किया गया है। एनीमेटर अपने–अपने गांव में हर माह दोनों समूहों की मासिक बैठक करना, समूह सदस्यों की काउन्सलिंग, समूह सदस्यों के स्तर पर होने वाले बदलाव को पहचानना व बदलाव को लिखने में फैसलिटेटर की मदद करना, महिलाओं व बच्चों के साथ होने वाली हिंसा व भेदभाव के खिलाफ व्यक्तिगत व सामूहिक पहल हेतु प्रयास करना, गांव स्तरीय विभिन्न सेवा प्रदाताओं व स्टेक होल्डर्स के साथ रिश्ते बनाना तथा गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाओं की प्राप्ति के लिए सामाजिक तथा सेवा प्रदाताओं की जवाबदेही तय करना का कार्य करता है। एनीमेटर की मदद के लिए सहयोगी संस्थाओं की ओर से फैसलिटेटर नियुक्त किये गये हैं।

गांव स्तर पर एनीमेटर व फैसलिटेटर की समझ बनाने तथा उनकी मदद के लिए सहयोगी संस्थाओं द्वारा फेम सदस्यों के बीच से अनुभवी मेन्टर चयनित किये गये हैं। मेंटर समूह की बैठकें, एनीमेटर्स की मासिक बैठकों, समुदाय स्तरीय अभियान तथा अन्य गतिविधियों में भाग लेते हैं तथा जरूरी इनपुट देने का काम करते हैं। सी0एच0एस0जे0 द्वारा हर तीन महीने में अलग–अलग विषयों में एनीमेटर व फैसलिटेटर की जानकारी व क्षमता वृद्धि हेतु आवासीय प्रशिक्षण का आयोजन करता आ रहा है।

## मॉडयूल के बारे में :

'समझदार जीवनसाथी एवं जिम्मेदार पिता' कार्यक्रम के तहत आठवें चरण के प्रशिक्षण मॉडयूल में एनीमेटर्स व फैसलिटेटर्स की पैरोकारी व परियोजना के स्थायित्व पर जानकारी व समझ बढाने के लिए प्रशिक्षण मॉड्यूल तैयार किया गया है।

## मॉडयूल के अपनाई गई पद्धति :

माड्यूल में सहभागी पद्धति से विभिन्न तरीकों के इस्तेमाल पर गतिविधियों का निर्धारण किया गया है ताकि प्रतिभागी रूचिकर तरीके से विभिन्न विषयों पर अपनी जानकारी व अभ्यासों के माध्यम से कौशल को बढ़ा सकें। इसके लिए समूह चर्चा, सामूहिक अभ्यास व प्रस्तीतकरण व चर्चा आदि को जोड़ा गया है।

## उददे्श्य :

आठवें चरण के प्रशिक्षण मॉड्यूल का मुख्य उद्देश्य इस प्रकार से है –

- पैरोकारी के क्या है? पैरोकारी के विभिन्न तरीकों पर समझ बनाना।
- परियोजना को समुदाय स्तर पर आगे बढ़ाने में एनीमेटर की समझ विकसित करना।
- सहयोगी संस्थाओं की भूमिकाओं व सहयोग पर नियोजन तैयार करना।

## पहला दिन

### सत्र 01– स्वागत, परिचय एवं प्रशिक्षण के उद्देश्यों पर स्पष्टता

**उददेश्य :**

- सभी प्रतिभागी एक दूसरे के बारे में जान पायेगें।
- दो दिवसीय प्रशिक्षण के उद्देश्यों को जान पायेगें।

**पद्वति :** दो–दो के जोड़े में
**समय :** 60 मिनट

**गतिविधियां :**

1. सर्वप्रथम प्रशिक्षक सभी प्रतिभागियों का स्वागत करें।
2. इसके बाद प्रशिक्षक प्रतिभागियों को स्पष्ट करें कि हम लोग दो–दो के जोड़े में एक दूसरे का परिचय देगें। जिसमें प्रतिभागियों को अपना नाम, गॉव का नाम तथा अपने गांव में क्या–क्या काम करते हैं को साझा करने के लिए कहें।
3. सर्वप्रथम प्रशिक्षक अपना परिचय प्रतिभागियों को बतायें।
4. परिचय की प्रक्रिया पूरी हो जाने के बाद प्रशिक्षक को चाहिये कि वे तीन दिवसीय प्रशिक्षण के उद्देश्यों के बारे में प्रतिभागियों को स्पष्ट करें।
5. तत्पश्चात् किसी प्रतिभागी को प्रेरित करें की वह सामूहिक तौर पर कोई गाना सुनाये। यदि प्रतिभागियों की ओर से पहल न हो तो प्रशिक्षक स्वयं गाने की शुरूआत करें लेकिन सभी प्रतिभागियों से कहें कि वो भी साथ में गायें।

### सत्र 02– अपेक्षाएं एवं आधारभूत नियम

**उद्देश्य :**

- प्रशिक्षण कार्यक्रम से प्रतिभागियों की अपेक्षाओं को स्थापित करना तथा प्रशिक्षण के सुचारू संचालन हेतु नियम बनाना।

**पद्वति :** सामूहिक चर्चा व प्रस्तुतीकरण
**समय :** 60 मिनट

**सामग्री :** बोर्ड, मार्कर

**गतिविधियां :**

1. प्रशिक्षक सबसे पहले प्रतिभागियों से उनकी दो दिवसीय प्रशिक्षण से अपेक्षाएं जाने। इसके लिए उन्हे अपने नोट पैड में लिखने के लिए 5 मिनट का समय निर्धारित कर दें।
2. प्रशिक्षक, प्रतिभागियों को यह भी स्पष्ट कर दें कि आपकी बहुत सारी अपेक्षाएं होंगी लेकिन आपको उन में से कोई मुख्य दो अपेक्षाओं को ही लिखना है।

3. प्रतिभागियों द्वारा अपेक्षाओं को लिखने के बाद एक–एक करके सभी प्रतिभागियों से उनकी अपेक्षा को पढ़ने के लिए कहें तथा निकलने वाली अपेक्षा को बोर्ड में लिखते जाय। यह क्रम जारी रखते हुए सभी प्रतिभागियों से उनकी अपेक्षाओं निकलवायें।
4. प्रशिक्षक, प्रतिभागियों की अपेक्षाओं को वर्गीकृत करते हुए बोर्ड पर लिखी गई अपेक्षाओं को सभी के साथ स्पष्ट करें।
5. यदि कोई प्रतिभागी निकली हुई अपेक्षाओं के अतिरिक्त कुछ और जोड़ना चाहता हो तो इसके लिए उन्हें प्रोत्साहित करें।
6. तत्पश्चात् फैसलिटेटर बोर्ड़ में वर्गीकृत अपेक्षाओं को पढ़कर सुनाए कि हम इस प्रशिक्षण में किन–किन अपेक्षाओं को इस प्रशिक्षण के दौरान पूरा कर पायेगें।
7. प्रतिभागियों से निकली अपेक्षाओं के चार्ट को दीवार में लगा दें ताकि प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतिम दिन प्रतिभागी मूल्यांकन कर पाये कि उनकी कौन–कौन सी अपेक्षाएं पूरी हो पाई।

**आधारभूत नियम :**

1. प्रशिक्षण कार्यक्रम को व्यवस्थित तरीके से संचालित करने के लिए कुछ आधारभूत नियम बनाने के लिए प्रतिभागियों को उत्साहित करे।
2. इस प्रशिक्षण के विषय को ध्यान में रखते हुए प्रशिक्षक को चाहिये कि वे अपनी तरफ से कुछ नियम जोड़े ताकि सभी प्रतिभागियों की गरिमा तथा गोपनियता के सिद्धातों का पालन हो सके व सभी प्रतिभागी उनका ध्यान रखें।
3. नियमावली बनाने के बाद उसे हाल में लगा दें ताकि सभी प्रतिभागी उनका पालन कर सकें।
4. प्रशिक्षक को चाहिये कि वह सभी प्रतिभागियों को स्पष्ट कर दें कि बनाये गये नियमों का पालन करना हर प्रतिभागी की जिम्मेदारी हैं तथा इसके लिए सभी साथी एक दूसरे की मदद करेगें।

## सत्र 03– सामाजिक बदलाव को समझना व समस्याओं की पहचान

**उददेश्य :**

- प्रतिभागी सामाजिक बदलाव के विभिन्न पहलुओं को समझ पायेगें।
- प्रतिभागी समुदाय स्तरीय समस्याओं की पहचान पर अपना दृष्टिकोण बना पायेगें।

**पद्वति :** समूह अभ्यास व चर्चा, कहानी प्रस्तुतीकरण

**समय :** 90 मिनट

**सामग्री :** बोर्ड/चार्ट, मार्कर, सफेद पेपर

**गतिविधियां :**

1. सर्वप्रथम प्रतिभागियों को एक छोटा सा खेल कराकर की जाने वाली चर्चाओं को ध्यान से समझने के लिए कहें।
2. प्रशिक्षक दी गई विभिन्न स्थितियों से जुड़ी कहानियों को सुनाते हुए प्रतिभागियों से कहानियों पर उनके विचारों को जानने का प्रयास करें तथा विश्लेषणात्मक चर्चा करते हुए अपना इनपुट दें।
3. अंत में प्रशिक्षक चर्चाओं के आधार पर सार संक्षेपण करें।

**स्थिति 1 – हाथ काला या सफेद**

प्रशिक्षक को चाहिए कि वह प्रतिभागियों की तरफ अपना पंजा दिखाते हुए पूछे कि इसका रंग कैसा है सफेद या काला। प्रतिभागियों के जवाब के बाद स्पष्ट करें कि मेरी तरफ से हाथ का रंग काला है और आपकी तरफ से सफेद। इसी तरह से हमारे समाज में भी किसी मुद्देपर सभी लोगों की समझ अलग–अलग हो सकती है और हर कोई अपने ज्ञान के आधार पर सही हो सकता है। हमें सबके विचारों व तर्को को समझने की जरूरत है। बदलाव की प्रक्रिया में कोई सही और गलत नहीं होता।

**स्थिति 2 – छोटे पेड़ उखाड़ने के लिए क्या करना होता है**

प्रतिभागियों के जवाब के आधार पर चर्चा को आगे बढ़ाते हुए प्रशिक्षक स्पष्ट करें कि पहले हिलाना और उखाड़ना होगा। इसी प्रकार बाल विवाह के मुद्दे पर हमें पहले लोगों के तर्क को समझना चाहिये उसके बाद अपने तर्को के साथ समझाना चाहिये। आस–पास के माहौल को अपने पक्ष में लाकर ही बदलाव लाया जा सकता है।

**स्थिति 3 – पेज को चार भाग में मोड़ना**

सभी प्रतिभागियों को एक पेज को चार भागों में मोड़ने के लिए कहें और प्रतिभागियों का अवलोकन करें कि वे क्या करते हैं। पता चलता है कि लोग अपने अगल–बगल में जैसा देखते हैं वैसा ही करने का प्रयास करते हैं और वैसा ही अपने दिमाग में भाव लाते हैं और बदलाव की प्रक्रिया भी इसी तरह से चलती है।

**स्थिति 4 – बैट की खरीददारी**

तीन प्रतिभागियों को सामने बुलायें और एक बैट खरीदने के लिए स्थिति बतायें जिसकी कीमत 60 रू0 है। 3 लोगों को बैट खरीदना है। एक दूसरा व्यक्ति ने बताया कि वही बैट दूसरी दुकान में 50 रू0 में मिल रहा है। दुकानदार ने तीनो से बैट के 20–20 रू0 लिया और फिर 2–2 रू0 वापस दे दिया तथा 4 रू0 अपने पास रख लिया। अब तीनो लोगों को 18 रू0 खर्च करने के हिसाब से 54 रू0 का ही हिसाब मिल रहा था 2 रू0 का हिसाब नही मिल रहा था। इस पर स्पष्ट करें कि समाज में भी ऐसा ही होता है अतः हमें लोगों के बहकावें में न आकर विपरीत तरीके से भी सोचने और करने की जरूरत होती है।

**स्थिति 5 – पंखा चालू–बंद**

किसी एक प्रतिभागी को पंखा चालू और बंद करने के लिए कहें। इस प्रक्रिया को ध्यान से देखने के लिए प्रतिभागियों को कहें तथा 4–5 बार चालू और बंद प्रक्रिया को दोहराएं। पता चलेगा कि पंखा तुरंत चालू तो हो जाता था लेकिन बंद करने के बाद भी जल्दी रूकता नही था अर्थात काम का असर धीरे–धीरे होता है और उसका असर दिखने में थोड़ा समय लगता है इसलिए हमें लगातार प्रयास करते रहने की जरूरत होती है।

## सत्र 04– बदलाव हेतु सामाजिक व कानूनी व्यवस्थाओं की पहचान

**उददेश्य :**

- प्रतिभागी सामाजिक बदलाव हेतु विभिन्न पहलुओं पर अपनी जानकारी व समझ बना पायेगें।

**पद्वति :** समूह चर्चा, कहानी प्रस्तुतीकरण
**समय :** 90 मिनट

**सामग्री :** बोर्ड/चार्ट, मार्कर,

**गतिविधियां :**

- सर्वप्रथम प्रतिभागियों को अलग–अलग परिस्थिति आधारित कहानी को सुनायें।
- प्रशिक्षक परिस्थिति के आधार पर समस्या से सम्बंधित समाधान के विभिन्न पहलुओं का निकलवाने का प्रयास करें।

  **परिस्थिति 1** – एक 30 साल की विधवा महिला की पेंशन रूकी हुई हैं इस समस्या का समाधान क्या हो सकता है?

  **परिस्थिति 2** – प्रतिभागियों को दो समूहों में बांटकर 70 साल से बंद एक कमरे में खजाना निकालने के तरीकों को बताना है।
- प्रशिक्षक को चाहिये कि वह विभिन्न परिस्थितियों का विश्लेषण करते हुए प्रतिभागियों की समझ बनायें। इसके लिए किसी समस्या को लेकर गांव से लेकर ब्लाक, जिला व राज्य स्तरीय समस्या समाधान के ढ़ांचे को स्पष्ट करें।

**सार** – हमें समस्या के विभिन्न कारणों को समझना जरूरी है तभी हम उनका समाधान कर सकते हैं। कारणों को समझने के बाद हमें एक प्रक्रिया में चलने की जरूरत होती है और फिर विभिनन तरीकों का इस्तेमाल करना होता है। समाज में हजारों साल की परम्पराओं को बदलने के लिए भी एक रास्ता बनाना होता है, लोगों का सहयोग लेना होगा तभी समस्याओं का समाधान हो सकता है।

## सत्र 05– पैरोकारी तथा उसके चरणों पर समझ

**उददेश्य :**

- पैरोकारी पर प्रतिभागियों की जानकारी व समझ बढ़ाना।

**पद्वति :** सामूहिक चर्चा
**समय :** 90 मिनट
**सामग्री :** बोर्ड/चार्ट, मार्कर

**गतिविधियां :**

- प्रशिक्षक सबसे पहले प्रतिभागियों से पैरोकारी पर उनके विचार को समझने का प्रयास करें।
- प्रतिभागियों से निकली बातों को बोर्ड पर लिखते जाय।
- प्रतिभागियों से निकली बातों को जोड़ते हुए पैरोकारी क्या है, इसको स्पष्ट करें।
- पैरोकारी के लिए महत्वपूर्ण बातें क्या हैं इस पर प्रशिक्षक सामूहिक चर्चा के माध्यम से जानकारी दें।
- प्रतिभागियों के साथ पैरोकारी के विभिन्न चरणों पर उनकी समझ बनायें।
- चर्चा के दौरान प्रतिभागियों को अपनी राय रखने तथा यदि कोई प्रश्न हो तो उसे रखने का मौका दें ताकि किसी तरह का कोई कन्फूजन न रहे।
- अंत में प्रतिभागियों को चार समूह में बैठकर निम्न अलग–अलग चार मुद्दो पर पैरोकारी के बिन्दुओं को लिखने तथा प्रस्तुतीकरण करने हेतु निर्देश दें।
  - देखभाल में पुरूषों की भागीदारी
  - किशोरी स्वास्थ्य
  - घरेलू हिंसा

- बाल विवाह

**प्रशिक्षक के लिए –**

पैरोकारी : व्यक्ति या समूह द्वारा सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक व्यवस्था के निर्णय को प्रभावित करने की प्रक्रिया है। पैरोकारी के विभिन्न विषयों के चयन के लिए सर्वप्रथम मुद्दो को समझना जरूरी है। इसके बाद जिस विषय को लेकर पैरोकारी करना है उस समस्या का समाधान कहां और किसके पास होगा उसकी पहचान करना होगा। जो भी संभावित सहयोगकर्ता हैं उन्हें विभिन्न माध्यमों से अपने पक्ष में करना होगा और इसके लिए तर्को के साथ अपनी बातों को समझाना होगा।

पैरवी और परामर्श में अंतर : पैरवी में किसी के तर्क को गलत कहा जा सकता है परन्तु परामर्श में किसी को गलत नही कहा जा सकता। पैरवी निर्णय को प्रभावित करने की प्रक्रिया है जबकि परामर्श में निर्णय में सहयोग करने की प्रक्रिया।

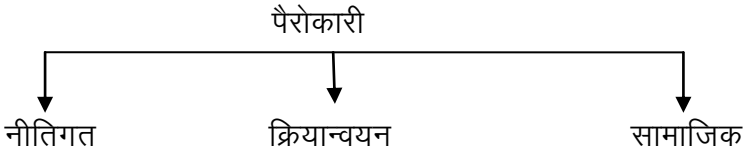


| पैरोकारी के चरण | |
|---|---|
| लक्ष्य | अवसर/खतरें/मुख्य निर्णयकर्ता की पहचान |
| रणनीति | मुख्य संवादकार/उनकी राय/उनकी जानकारी का स्रोत |
| संवाद | तर्क/हर व्यक्ति के अनुसार संवाद |
| सहयोग | मीडिया व अन्य |
| संगठन | समुदाय स्तरीय संगठन व अन्य संगठनों को जोड़ना |
| प्रभावकारी गतिविधियां | समूह चर्चा, दीवार लेखन, नुक्कड–नाटक, परामर्श, सेमिनार, सामग्री का प्रकाशन आदि |

## दूसरा दिन

### सत्र 01– पहले दिन का रिकैप

**उददेश्य** :

- प्रतिभागी दूसरे दिन हुई चर्चाओं से बनी सीख का आंकलन कर पायेगें।
- दूसरे दिन के सत्रों पर प्रतिभागियों के कन्फयूजन पर स्पष्टता बन पायेगी।

**पद्धति :** व्यक्तिगत शेयरिंग
**सामग्री :** बोर्ड/चार्ट, मार्कर

**समय :** 60 मिनट

**गतिविधियां :**

1. प्रशिक्षक दूसरे दिन कार्यक्रम की शुरूआत किसी सामूहिक गीत से करवायें।
2. इसके बाद प्रतिभागियों को स्पष्ट करें कि पहले दिन हुई चर्चाओं के बारे में क्या सीख बनी तथा अभी कौन सा विषय है जिस पर और स्पष्टता चाहिये, बताने के लिए कहें।
3. पहले सभी प्रतिभागियों से बारी–बारी से उनकी सीख को बताने के लिए कहें।
4. प्रतिभागियों की सीख के बाद जिन विषयों में कन्फूयजन हो उसको बताने के लिए कहें।

5. प्रशिक्षक निकलने वाले बिन्दुओं को बोर्ड/चार्ट में लिखते जाय।
6. अंत में प्रशिक्षक को चाहिये कि निकले हुए बिन्दुओं को पुनः स्पष्ट करें।

## सत्र 02– पैरोकारी का नियोजन

**उददेश्य** :

- पैरोकारी हेतु नियोजन तैयार करने पर समझ बनाना।

**पद्धति :** व्यक्तिगत कार्य व शेयरिंग
**सामग्री :** बोर्ड/चार्ट, मार्कर

**समय :** 60 मिनट

**गतिविधियां :**

- प्रतिभागियों को गांव स्तर पर पी0आर0ए0 माध्यम से चिन्हित विभिन्न सामाजिक समस्याओं/मुद्दो का रिकैप करायें तथा बोर्ड पर लिखते जाय।
- इसके बाद सभी प्रतिभागियों को चिन्हित मुद्दो पर पैरोकारी हेतु योजना बनाने के लिए कहें।
- प्रतिभागियों के योजना बनाने के लिए प्रशिक्षक निम्न के अनुसार एक ढ़ॉचा बनाकर स्पष्ट करें।
- जब प्रतिभागी/एनीमेटर अपनी योजना बना रहे हों उस समय प्रशिक्षक बीच–बीच में जाकर उनकी मदद करें तथा यदि कोई कन्फूजन हो तो दूर करें।
- तैयार योजना को वापस गांव में अपने समूह में फैसलिटेटर की मदद से चर्चा करने तथा इसे अंतिम रूप से तैयार करने के लिए कहें।
- योजना की एक प्रति फैसलिटेटर के पास भी जमा करने के लिए कहें।

**फैसलिटेटर के लिए –**

| एनिमेटर्स का योजना | | | | |
|---|---|---|---|---|
| **गाँव** | **एनिमेटर** | **व्यक्तिगत स्तर** | **पिता समूह** | **किशोर समूह** |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |

## सत्र 03– चलाई जाने वाली प्रक्रियाएं व भूमिकाओं को तय करना

**उददेश्य** :

- समुदाय स्तर पर चलाई जाने वाली प्रक्रियाओं पर साझा नियोजन बनाना।
- समुदाय स्तरीय हस्तक्षेप के लिए परस्पर सहयोग की पहचान करना।

**पद्धति :** व्यक्तिगत कार्य व शेयरिंग
**सामग्री :** बोर्ड/चार्ट, मार्कर

**समय :** 60 मिनट

**गतिविधियां :**

- प्रशिक्षक प्रतिभागियों से पूछे कि परियोजना के बाद भी कौन–कौन सी प्रक्रियाएं लगातार चलाते रहेगें?
- प्रतिभागियों से निकलने वाले जवाब को प्रशिक्षक बोर्ड पर लिखते जाय तथा प्रतिभागियों से निकले जवाबों के बाद अपने इनपुट दें।
- इसके बाद एनिमेटर व पार्टनर संस्था की भूमिकाओं पर सामूहिक चर्चा करायें। निकलने वाले बिन्दुओं को बोर्ड पर लिखते जाय।
- प्रतिभागियों से निकले जवाबों के बाद प्रशिक्षक अपनी बातों को भी प्रतिभागियों के साथ साझा करें तथा उनकी सहमति के आधार बोर्ड में लिखते जाय।
- प्रशिक इस पूरी प्रक्रिया के बाद निकले बिन्दुओं को वापस एनीमेटर्स की मासिक बैठक में अपनी–अपनी पार्टनर संस्थाओं के साथ शेयर करने व चर्चा करने के लिए कहें।

**प्रशिक्षक के लिए –**

**चलाई जाने वाली संभावित प्रक्रियाएं :**

- पिता व किशोर समूह की बैठकें व मुद्दो पर चर्चा
- एनीमेटर्स का एक दूसरे के साथ संवाद
- भेदभाव व हिंसा के मुद्दे पर कदम उठाना या एक्शन लेना
- वाट्सअप ग्रुप में शेयरिंग
- एक–दूसरे का सहयोग लेना
- व्यक्तिगत मदद करना व जानकारी बढ़ाना

परियोजना के बाद चलने वाली प्रक्रिया में एनिमेटर्स एवं संस्थाओं की भूमिका -

| एनिमेटर्स की भूमिका | संस्थाओं की भूमिका |
|---|---|
| एनिमेटर्स रोल मोडल के रूप में कार्य करेंगे | नयी सूचनाओं, योजना, कानून की जानकारी, संस्था द्वारा सम्पर्क व्यक्ति फैसिलिटेटर का विकल्प |
| समूह बैठक एवं एक्शन | IEC मैटेरियल, आवश्यकता अनुसार मदद |
| बदलाव की कहानी | मीडिया में प्रचार |
| ग्राम स्तरीय अभियान | प्राइज, टोफ्फी, IEC |
| दिवस आयोजन | NA |
| एनिमेटर्स का मुद्दों पर विमर्श | संस्था द्वारा वार्षिक पिकनिक, कार्यक्रम में निमंत्रण एवं IEC की उपलब्धता |
| एनिमेटर्स द्वारा समूह सदस्यों का सहयोग | NILL |
| PRA का फॉलोअप | मोडल आवेदन पत्र का फॉर्मेट साझा करना |
| ग्राम सभा में मुद्दों उठाना | संबंधित मुद्दों पर जानकारी |